सिद्धचक्र का चमत्कार

चम्पानगरी के राजा सिंहरथ थे। उनकी रानी कमलप्रभा ने सुन्दर एक पुत्र को जन्म दिया। बड़ी मनोतियों के बाद पुत्र होने के कारण राजा ने धूमधाम से पुत्र का जन्मोत्सव मनाया।

श्रीपाल आठ वर्ष का भी नहीं हुआ था कि अचानक उसके सिर से पिता का साया उठ गया। राजा की मृत्यु के कारण पूरे राजमहल में रुदन विलाप का मनहूस वातावरण छा गया।

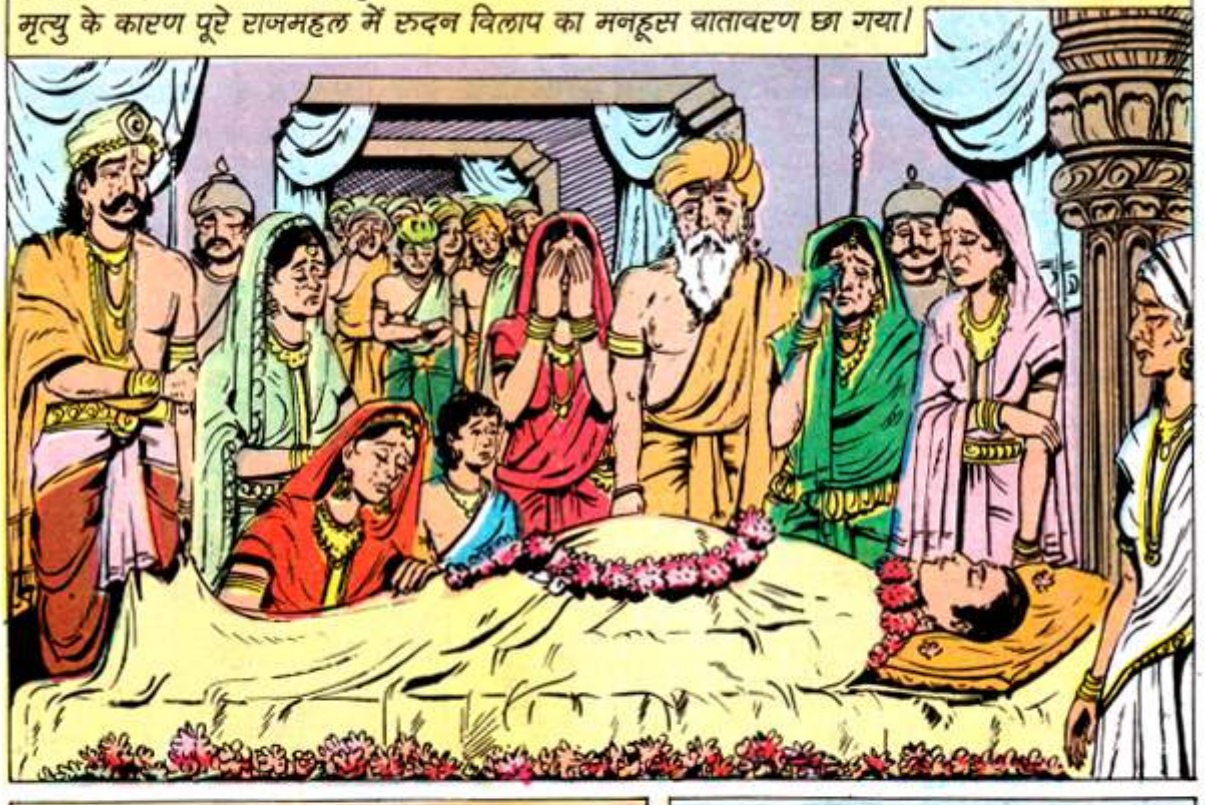

सिंहरथ राजा का छोटा भाई अजितसेन था। उसने इस मौके का फायदा उठाने के लिए अपने पक्ष के लोगों से मंत्रणा की।

महल के एक वफादार परिचारक ने इस षड्यंत्र की सूचना मंत्री मतिसागर को दी। मंत्री मतिसागर तुरंत महारानी कमलप्रभा के पास पहुँचा और बोला–

रानी यह खबर सुनते ही विचलित हो उठी।

"मंत्रीजी, किसी भी प्रकार कुमार श्रीपाल की रक्षा का प्रबंध कीजिए।

महारानी जी, ऐसे समय में राजमहल के किसी भी परिचारक पर भरोसा करना खतरनाक हो सकता है, अतः आप तुरंत राजकुमार को लेकर गुप्तद्वार से चंपा से दूर कहीं जाकर छुप जाइए.....

मंत्री की व्यवस्था के अनुसार रानी राजकुमार को अपने साथ लेकर महलों के गुप्तद्वार से अंधेरी रात में जंगल की ओर अकेली निकल पड़ी। रात के घुप अंधेरे में सांय-सांय करते जंगल में रानी ठोकरें खाती, गिरती-उठती राजकुमार की अंगुली पकड़े भटकने लगी।

हे प्रभू, ऐसे संकट के समय केवल आपका ही सहारा है। सत्य और शील हम दोनों की रक्षा करें।